

24, 32. MEGH. 93. Spr. 3033. शर्म MBH. 3, 1799. R. 3, 39, 22. BHĀG. P. 3, 39. रतिम् KATHĀS. 38, 92. मुद्रम् MBH. 3, 1876. 3006. 3, 7546. MĀRK. P. 16, 86. प्रकल्पम् R. GORR. 2, 121, 1. 4, 7, 24. नेत्रनिर्वाणम् ÇĀK. 33, 1. धृतिम् KATHĀS. 18, 315. लब्धदिव्यरसास्वाद 346. शक्तिमात्मनः R. 1, 64, 16. शम् 2, 83, 19. केवलत्वम् MAITRĀJUP. 6, 21. स्वातन्त्र्यम् 22. पुरुषत्वम् MBH. 3, 7382. Spr. 4171. BHĀG. P. 5, 24, 1. ब्राह्मण्यम् R. 1, 63, 23. पौराज्यम् R. GORR. 2, 12, 27. स्वास्थ्यम् ÇĀK. 38, 5. वाल्मभ्यम् RĀGĀ-TAR. 6, 158. मानम् R. 2, 109, 3. द्युतिं सैहीम् Spr. 2822. प्रतिष्ठाम् 3963. विभ्रान्तिम् VIKR. 20. विभ्रान्त् R. 2, 60, 7. वृद्धिम् R. 1, 25. प्रभावम् KATHĀS. 19, 11. सुप्रयाम् Spr. 3226. प्रवेशम् MEGH. 41. PAÑĀT. 31, 9. खड्गधारापरिघड्गम् Spr. 2486. शिरःकृत्तनविधिम् 4147. सद्यम् R. 4, 7, 4. सेवाम् RĀGĀ-TAR. 3, 154. लब्धयुष्मत्प्रसाद् BHĀG. P. 3, 13, 7. अनुज्ञाम् MBH. 3, 14797. AK. 2, 7, 10. डुःखम् R. 2, 74, 25. Spr. 267. 3262. क्षेशम् 2062. मृत्युम् R. 3, 49, 54. MĀRK. P. 43, 20. शापम् 74, 42. जनातिरस्त्रिक्रियाम् Spr. 169. असमानम्, विडम्बनम् 163. वञ्चनम् R. 2, 34, 37. पापम् 75, 38. निद्राम् R. 2, 51, 9. 86, 10 (94, 11 GORR.). Spr. 4321. VET. in LA. (III) 20, 5. स्पर्शम्, संस्पर्शम् eine Berührung erfahren, berührt werden RĀGĀ-TAR. 4, 22. KATHĀS. 4, 63. 37, 17. कर्पूरः पावकस्पृष्टः सौरभं लभतेतराम् Spr. 3329. अलभततरां निर्वृतिम् KATHĀS. 26, 283. लब्ध = प्राप्त AK. 3, 2, 54. TRIK. 3, 3, 148. H. 1490. — 3) mit einem infin. P. 3, 4, 65. zu — bekommen. द्रष्टुम् MBH. 4, 95. Spr. 3131 (vgl. न तमिह दर्शनाय लभते KHĀND. UP. 8, 3, 1). भोक्तुम् P. 3, 4, 65, Sch. प्रवेष्टुं लभते es gelingt ihm einzutreten HARIV. 8249. न चेनं कश्चिदा-रोष्ठु (v. l. für आरुष्ठु) लभते राजसतमम् so v. a. es gelingt Niemand zu sehen, wie der König hinaufsteigt MBH. 1, 1756. मर्तुमपि न लभ्यते es ist Einem nicht ein Mal zu sterben vergönnt KATHĀS. 96, 22. नाधर्मो लभ्यते कर्तुं लोके वैद्याधरे so v. a. es kann —, es darf kein Unrecht verübt werden 106, 156. RĀGĀ-TAR. 3, 142. पष्टुं ततो नात्मत द्विज्ञान् er fand keinen Brahmanen zum Opfern MĀRK. P. 133, 21. — 4) besitzen, haben: अय-त्योत्पादनाय सामर्थ्यमलभमानः SĀJ. zu RV. 4, 123, 1. लभते नात्मलाभं र-श्मयश्चन्द्रसूर्ययोः MĀRK. P. 60, 8. अन्वयमलभमानः keinen logischen Zu- sammenhang habend SĀH. D. 12, 2. 15, 6. — 5) wahrnehmen, erkennen: तदभिज्ञानलब्ध्या KATHĀS. 39, 107. herausbringen, hinter Etwas kommen: सत्यमलभमानः KULL. zu M. 8, 109. pass. sich ergeben, sich herausstellen, zu Tage treten SARVADARÇANAS. 123, 9. fgg. 131, 1. 159, 10. SĀH. D. 4, 8. als Resultat einer Rechnung WEBER, GĪOT. 83. धमणो र्चनम् u. s. w. गम-नादेव लभ्यते so v. a. fällt unter den Begriff von BHĀSHĀP. 6. — caus. लम्भयति P. 7, 1, 64. aor. अललम्भत् VOP. 18, 1. 1) bewirken, dass Jmd Etwas erlangt, bekommt, theilhaftig wird; mit dopp. acc.: घ्रासनम् HARIV. 14347. पुत्रं ह्वाम् RAGH. 18, 8. KATHĀS. 30, 104. शरीरं वासुदेवस्य रामस्य च महत्मानः संस्कारं लम्भयामास MBH. 1, 624. MĀRK. P. 22, 46. सत्कारं लम्भयामास सखायं पूजयन्पितुः MBH. 3, 16068. HARIV. 4901. विद्रूपकं संज्ञो लम्भयति giebt Vid. ein Zeichen VIKR. 47, 12. ल-म्भयन्नपरान्पुण्यम् ÇĀTR. 14, 78. ÇĀK. zu BRH. ĀR. UP. S. 234. देहभेदे च लम्भितः MBH. 2, 1529. स्त्रीभावं चापि लम्भिता HARIV. 9929. 10065. सो ऽयं मृत्युं मर्त्येन लम्भितः R. 6, 94, 17. तेन पित्रा बालो ऽपि स विद्याः स्ने-हेन लम्भितः KATHĀS. 63, 74. लम्भितलोभं GĪT. 2, 4. statt des acc. auch instr. der Sache: सितं सितिन्ना सुतरां मुनेर्वपुः — लम्भयन् ÇĪC. 1, 25. — 2) bekommen, erhalten: स्वभार्यां कुले महति लम्भिताम् (= परिणीताम्

Comm.) BHĀG. P. 6, 1, 65. — 3) herausbringen, hinter Etwas kommen: असक्तिकेषु वर्धेषु मिथो विवादमानयोः । अविन्दस्तद्धतः सत्यं शपथेनापि लम्भयेत् ॥ M. 8, 109.

— desid. लिप्सते (लीप्सते TBR.) P. 7, 4, 54. 8, 4, 55. VOP. 19, 9. 12. hier und da auch act. aus metrischen Rücksichten; zu ergreifen —, zu erwischen —, zu bekommen —, zu erlangen —, zu erhalten —, zu gewinnen suchen: रुतं निपाने (so die ed. Bomb.) लिप्सतौ व्याघ्रवृत्ताव-तिष्ठताम् MBH. 7, 3792. 13, 225. BHĀṬṬ. 7, 88. भगस्य TBR. 1, 6, 10, 5. ÇĀKĪH. ÇR. 8, 8, 9. कृष्यम् GOBH. 1, 9, 14. LĪTJ. 5, 3, 9. भित्तम् M. 6, 50. अलब्धं चैव लिप्सते Spr. 233. यो ऽदत्तादायिनो हस्तालिप्सते ब्राह्मणो धनम् M. 8, 340. लिप्सतः सर्ववस्तूनि BHĀG. P. 8, 8, 35. HIT. II, 8 (wohl fehlerhaft). काम्यां वृत्तिं लिप्समानः MBH. 12, 9431. देशानलब्धौलिप्सते लब्धांश्च परिपालयेत् M. 9, 251. साधैवार्थं ततो लिप्सेत् MBH. 3, 1256. अज्ञातलिप्सं (adv., °प्सो ed. Bomb.) लिप्सते 12, 9987. 13, 1617 (act.). 14, 882. R. GORR. 1, 32, 9. 2, 26, 37. KĀM. NĪTIS. 11, 32. अन्नरम् MBH. 3, 1637. 2645. तस्मात्स्नेहं न लिप्सते मित्रेभ्यो धनसंचयात् Spr. 3012. गुणाधि-काम्मुदं लिप्सेदनुक्रेषां गुणाधमात् BHĀG. P. 4, 8, 34. लिप्स्यमान P. 3, 3, 7. लिप्सित R. 4, 1, 30. — Vgl. लिप्सा fg. und लीप्सितव्य.

— अनु (von hinten) erwischen, haschen: धावन्तम् ÇĀT. BR. 3, 2, 1, 36. 4, 5, 10, 7. KĀTJ. ÇR. 25, 12, 24. — desid. ÇĀT. BR. ebend. KĀTJ. ÇR. 25, 12, 23.

— ग्रभि 1) anfassen, berühren: भागवताङ्गिरेणम् BHĀG. P. 2, 3, 23. — 2) bekommen, erhalten, erlangen, theilhaftig werden: देवान्निदिवं चाभिलेभिरे MBH. 12, 1186. अन्वरम् ein Kleid VARĀH. BRH. S. 71, 13. सर्वं स्वार्थम् BHĀG. P. 11, 5, 36. अन्वमानादीनि जनात् 5, 14, 36. मानम् 9, 10, 7. यं हविनापी भगवतो ऽभिलेभे sc. als Sohn 3, 1, 28. — desid. zu er- haschen —, zu bekommen wünschen: वासस्तदभिलिप्सती (das der Wind davongetragen hatte) MBH. 1, 2940. वृत्त्यर्थमभिलिप्सतः VĀJU-P. bei MUIR, ST. I, 30, N. 55.

— आ 1) erwischen, erfassen; anfassen, berühren RV. 10, 87, 7. इष्टम-र्चिरालभते TBR. 2, 1, 10, 1. पाणिभ्याम् AIT. BR. 8, 6. वेदशिरसा नाभिदे-शमालभते ĀCV. ÇR. 1, 11, 2. GRHJ. 1, 13, 7. KĀTJ. ÇR. 1, 10, 14. 2, 3, 1. PĀR. GRHJ. 2, 2. ललाटम् KAUC. 90. M. 4, 117. गाम् 5, 87 (= MĀRK. P. 33, 29). 11, 202. नामृतस्य हि पापीयान्भार्यामालभ्य जीवति MBH. 4, 516. 1313. अनालब्धं ज्ञप्सति गापिडवम् 5, 1909. 2929. R. GORR. 1, 42, 21. VARĀH. BRH. S. 24, 8. गावशालेभिरे (pass.) भैः BHĀṬṬ. 14, 91. Bemerkenswerth sind folgende Schwurformeln: सत्येनायुधमालभे MBH. 3, 15197. R. 2, 98, 6. 3, 33, 3. 26. अणुधं तेन सत्येन पदौ चैवालभे तव 2, 18, 19. सत्येना-लय पदौ ते 29, 24. तथा मूर्धानमालभे MBH. 3, 5991. सत्येनात्मानमालभे 3, 16847. 3, 5992. 14, 2373. तेनाहं विप्र सत्येन स्वयमात्मानमालभे 13, 156. सत्यमात्मानमालभे 13, 112. — 2) das Opferrthier fassen und anbin- den, daher euphemistisch für schlachten, opfern: यन्निषु मूर्धेष्वालभेन TBR. 1, 8, 6, 1. नास्मानालप्स्यधे AIT. BR. 2, 3. 6. 8. 4, 22. तमेतमभिषेच-नीयं पुरुधं पशुमालभे 7, 15. TS. 5, 4, 12, 2. प्रातर्वै पशुमालभते ÇĀT. BR. 3, 7, 2, 4. 1, 1, 4, 15. fg. वशमालभ्य संज्ञपयति 4, 5, 2, 1. 11, 8, 3, 5. अश्वमेधम् 2, 5, 4. 13, 7, 1, 9. KĀTJ. ÇR. 24, 2, 4. ब्रह्मणे ब्राह्मणमालभते Cit. bei NILAK. zu MBH. 2, 865. गर्दभं पशुमालभ्य JĀGŪ. 3, 280. MBH. 7, 2372. 12, 9428. 14, 285 (अलभत ed. Bomb. auch an erster Stelle). 2644 (अलभत ed. Bomb.). MĀKĪH. 161, 12. BHĀG. P. 5, 9, 13. 14, 10, 28. 21, 30. — 3) anfan-